UTKARSH CLASSES

For Session 2022-23

RBSE

भूगोल

CLASS-XII

मॉडल पेपर्स

सॉल्यूशन सहित

RBSE द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम व ब्लूप्रिंट पर आधारित नवीनतम मॉडल पेपर

भूगोल (14)

MODEL PAPER (RBSE) 9

कक्षा-XII

समय : 3 घंटे 15 मिनट | पूर्णांक : 56

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश:

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
6. प्रश्नों का अंक भार निम्नानुसार है।

खण्ड	प्रश्न की संख्या	प्रश्नों की संख्या	अंक प्रत्येक प्रश्न	कुल अंक भार
खण्ड- अ (A)	1 (i to ix) 2 (i to iv) 3 (i to iv)	17	1	17
खण्ड- ब (B)	4 से 15	12	1½	18
खण्ड- स (C)	16 से 18	3	3	9
खण्ड- द (D)	19 से 20	2	4	8
खण्ड- य (E)	21 से 22	2	2	4

7. प्रश्न क्रमांक 21 से 22 मानचित्र कार्य से संबंधित हैं और प्रत्येक 2 अंक का है।
8. भारत एवं विश्व के उपलब्ध कराये गये रेखा मानचित्रों को उत्तर पुस्तिका के साथ नत्थी करें।

खण्ड-अ

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) गाँधी जी के मानव विकास सम्बंधित विचारों का समर्थन करने वाली रिपोर्टों/पुस्तकों में सम्मिलित नहीं है- [1]

(अ) लिमिट्स टू ग्रोथ (1972)
(ब) ब्रंटलैण्ड कमीशन रिपोर्ट (1989)
(स) एजेंडा -21 रियो (1993)
(द) H.D.I. रिपोर्ट (1990)

(ii) चीनी उत्पादन में भारत का विश्व में स्थान है- [1]

(अ) चौथा (ब) तीसरा
(स) दूसरा (द) पहला

(iii) 'जल संभर प्रबंधन' किस समस्या का समाधान है? [1]

(अ) ध्वनि प्रदूषण (ब) भू- निम्नीकरण
(स) वायु प्रदूषण (द) गंदी बस्ती

(iv) मात्रात्मक क्रांति उपागम किस दशक में प्रचलित रहा है?[1]

(अ) 1930-40 (ब) 1950-60
(स) 1970-80 (द) 1980-90

(v) एक आदिम अवस्था वाली अर्थव्यवस्था में मुख्यतया क्रियाएँ होती हैं- [1]

(अ) प्राथमिक (ब) द्वितीयक
(स) तृतीयक (द) चतुर्थक

(vi) रोपण कृषि की फसल नहीं है- [1]

(अ) चाय (ब) कॉफी
(स) चना (द) गन्ना

(vii) रोजगार एवं राजस्व की दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा तृतीयक क्रियाकलाप है- [1]

(अ) पर्यटन (ब) बीमा
(स) फिल्म निर्माण (द) परिवहन

(viii) 'यूरो टनल ग्रुप' द्वारा संचालित सुरंग रेल मार्ग जोड़ता है-[1]

(अ) लंदन को बर्लिन से (ब) बर्लिन को रोम से
(स) पेरिस को लन्दन से (द) रोम को पेरिस से

(ix) 'सन्नगर' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कब व किसने किया?[1]

(अ) 1957, जीन गॉटमैन ने (ब) 1932, लेविस ममफोर्ड ने
(स) 1946, ग्रिफिथ टेलर ने (द) 1915, पैट्रिक गिडिज ने

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-
(i) जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम सन् ..... में लागू हुआ। [1]
(ii) जनवरी, 2015 में ..... ने योजना आयोग का स्थान लिया। [1]
(iii) थॉमस मॉल्थस ने अपना जनसंख्या सिद्धांत सन् ..... में दिया। [1]
(iv) मानव विकास सूचकांक (H.D.I.) के कोटि क्रम का स्कोर ..... से ..... के बीच होता है। [1]

3. अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-
(i) किस राज्य के घरों में जल संग्रहण संरचना बनाना अनिवार्य कर दिया गया है? [1]
(ii) किस नगर के द्वारा यमुना नदी सर्वाधिक प्रदूषित होती है? [1]
(iii) क्या आप मानते हैं कि प्रकृति का ज्ञान मनुष्य पर पर्यावरण की बंदिशों को कम करने में सहायक हैं? यदि हाँ तो कैसे? [1]
(iv) 'सामूहिक कृषि' का प्रारंभ किस देश में हुआ? [1]

खण्ड - ब

लघूत्तरात्मक प्रश्न-
4. जनसंख्या घनत्व के आधार पर भारत का प्रादेशिक वर्गीकरण कीजिए। [1½]
5. प्रवास के परिणाम स्वरूप स्त्रोत प्रदेश के अल्प विकास को बल कैसे मिलता है? समझाइए। [1½]
6. परिक्षिप्त (एकाकी) बस्तियों के बारे में आप क्या जानते हैं? [1½]
7. संसाधनों का संरक्षण क्यों आवश्यक है? [1½]
8. जनजातीय समन्वित विकास उपयोजना से गद्दी जनजाति को मिले तीन सामाजिक आर्थिक लाभ लिखिए। [1½]
9. भारत के आयात संघटन में आये दो परिवर्तन लिखिए। [1½]
10. प्रवास के प्रतिकर्ष कारकों को समझाइए। [1½]
11. मध्यम मानव विकास वाले देशों की तीन चुनौतियाँ बताइए। [1½]
12. 'राइन जलमार्ग' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। [1½]
13. विश्व व्यापार संगठन (W.T.O.) पर टिप्पणी लिखिए। [1½]
14. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को परिभाषित करते हुए इसके प्रकार बताइए। [1½]
15. 1991 की भारतीय जनगणना के अनुसार नगरीय बस्ती को परिभाषित कीजिए। [1½]

खण्ड-स

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-
16. भारत में स्वतन्त्रता से पूर्व सूती वस्त्र उद्योग के क्रमिक विकास का वर्णन कीजिए। [3]
17. भारत के किन्ही तीन अन्त:स्थलीय जलमार्गो की विवेचना कीजिए। [3]
18. चतुर्थक एवं पंचम क्रियाकलापों में अन्तर स्पष्ट कीजिए। [3]

खण्ड - द

निबन्धात्मक प्रश्न–
19. भारत की दो प्रमुख दलहन फसलों की विवेचना कीजिए। [4]

अथवा

भारत के कृषि उत्पादन में वृद्धि तथा कृषि प्रौद्योगिकीय विकास को समझाते हुए कृषि से जुड़ी किन्हीं दो समस्याओं की व्याख्या कीजिए। [4]
20. उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग की संकल्पना को विस्तार से समझाइए। [4]

अथवा

उद्योगों को प्रभावित करने किन्ही चार कारकों की व्याख्या कीजिए। [4]

खण्ड - य

21. दिए गए भारत के मानचित्र में निम्न समुद्री पत्तनों को दर्शाइए- [½x4=2]
(अ) कांडला
(ब) हल्दिया
(स) मार्मागाओ
(द) विशाखापट्टनम

22. दिए गए विश्व के मानचित्र में निम्न चलवासी पशुचारण क्षेत्रों को दर्शाइए- [½x4=2]
(अ) टुण्ड्रा प्रदेश
(ब) मंगोलिया
(स) अरब प्रायद्वीप
(द) मेडागास्कर

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

उत्तरमाला – 09

खण्ड - अ

1.

(i) [द]
मानव विकास से जुड़े गाँधी जी के विचार क्लब ऑफ रोम की रिपोर्ट 'लिमिट्स टू ग्रोथ' (1972), शूमाकर की पुस्तक 'स्माल इज ब्यूटीफुल' (1974), ब्रंटलैण्ड कमीशन की रिपोर्ट 'ऑवर कॉमन फ्यूचर' (1987) और अन्त में 'एजेण्डा-21 रिपोर्ट ऑफ द रियो कॉंफ्रेंस' (1993) में प्रतिध्वनित हुए। H.D.I. रिपोर्ट (1990) का इससे सम्बंध नहीं हैं।

(ii) [द]
चीनी उत्पादन में भारत का विश्व में प्रथम स्थान हैं। विश्व के कुल चीनी का लगभग 8 प्रतिशत उत्पादन भारत करता है। कच्चे माल के मौसमी होने के कारण, चीनी उद्योग एक मौसमी उद्योग है।

(iii) [ब]
'जल संभर प्रबंधन' भू-निम्नीकरण की समस्या का समाधान है। जलसंभर प्रबंधन कार्यक्रम भूमि, जल तथा वनस्पतियों के बीच संबद्धता को पहचानता है और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन एवं सामुदायिक सहभागिता से लोगों के आजीविका को सुधारने का प्रयास करता है।

(iv) [ब]
1950 से 1960 के दशक वाली समयावधि के दौरान भूगोल में स्थानिक संगठन उपागम (मात्रात्मक क्रान्ति) प्रचलित रहा । यह उपागम कम्प्यूटर और परिष्कृत सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग के लिए विशिष्ट था।

(v) [अ]
एक आदिम अवस्था वाली अर्थव्यवस्था में मुख्यतया, प्राथमिक क्रियाएँ होती हैं। इसमें मात्र प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन होता है। एक विकसित अर्थव्यवस्था ही अपने लोगों को विनिर्माण व सेवा सेक्टरों में समायोजित कर सकती है।

(vi) [स]
रोपण कृषि की प्रमुख फसलें हैं- चाय, कॉफी, रबड़, कपास, गन्ना, केले एवं अनन्नास आदि। चने की फसल दलहन की श्रेणी में आती है, रोपण कृषि में नहीं।

(vii) [अ]
कुल पंजीकृत रोजगारों तथा कुल राजस्व की दृष्टि से पर्यटन विश्व का सबसे बड़ा तृतीयक क्रियाकलाप है। वस्तुत: पर्यटन एक यात्रा है, जो प्रमोद के उद्देश्यों के लिए की जाती है।

(viii) [स]
इंग्लैण्ड में स्थित 'यूरो टनल ग्रुप' द्वारा प्रचालित सुरंग मार्ग पेरिस को लन्दन से जोड़ता है।

(ix) [द]
'सन्नगर' शब्दावली का सर्वप्रथम प्रयोग 1915 में पैट्रिक गिडिज ने किया था। सन्नगर, मूलत: अलग-अलग नगरों या शहरों के आपस में मिल जाने से बने एक विशाल नगरीय विकास क्षेत्र को कहा जाता है।

2.

(i) 1974
(ii) नीति आयोग
(iii) 1798
(iv) 0 से 1

3.

(i) तमिलनाडु में जल संग्रहण संरचना प्रत्येक घर में बनाना अनिवार्य कर दिया गया है।
(ii) दिल्ली नगर के द्वारा यमुना नदी सर्वाधिक प्रदूषित होती है।
(iii) प्रकृति का ज्ञान प्रौद्योगिकी को विकसित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है और प्रौद्योगिकी मनुष्य पर पर्यावरण की बंदिशों को कम करती है। अत: हम इस बात से सहमत हैं।
(iv) 'सामूहिक कृषि' का प्रारंभ रूस (पूर्व सोवियत संघ) देश में हुआ।

खण्ड - ब

4.

- **उच्चतर घनत्व-** उत्तरी भारत के राज्यों बिहार (1102), पश्चिम बंगाल (1029) तथा उत्तर प्रदेश (829) में जनसंख्या घनत्व उच्चतर है, जबकि प्रायद्वीपीय भारत के राज्यों में केरल (859) और तमिलनाडु (555) में उच्चतर घनत्व पाया जाता है।
- **मध्यम घनत्व-** असम, गुजरात, आंध्र प्रदेश, हरियाणा, झारखंड, ओडिशा में मध्यम घनत्व पाया जाता है।
- **निम्न घनत्व-** हिमालय प्रदेश के पर्वतीय राज्यों और असम को छोड़कर भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में अपेक्षाकृत निम्न घनत्व है।

5. स्रोत प्रदेश के दृष्टिकोण से यदि हुंडियाँ प्रवास के प्रमुख लाभ हैं तो मानव संसाधन, विशेष रूप से कुशल लोगों का ह्रास उसकी गंभीर लागत है। विकसित औद्योगिक अर्थव्यवस्थाएँ गरीब प्रदेशों से उच्च प्रशिक्षित व्यावसायिकों को सार्थक अनुपातों में प्रवेश दे रही है और भर्ती कर रही हैं। परिणामस्वरूप स्रोत प्रदेश के वर्तमान अल्पविकास को बल मिलता है।

6. भारत में परिक्षिप्त अथवा एकाकी बस्ती प्रारूप सुदूर जंगलों में- एकाकी झोंपड़ियों अथवा कुछ झोंपड़ियों की पल्ली तथा छोटी पहाड़ियों की ढालों पर - खेतों अथवा चरागाहों के रूप में दिखाई पड़ता है। भू-भाग और निवास योग्य क्षेत्रों के भूमि संसाधन आधार की अत्यधिक विखंडित प्रकृति के कारण परिक्षिप्त बस्तियों का उद्भव होता है। उदाहरण- मेघालय, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, केरल आदि।

7. सतत पोषणीय विकास की चुनौती के लिए आर्थिक विकास की चाह का पर्यावरणीय मुद्दों से समन्वय आवश्यक है। संसाधन उपयोग के परंपरागत तरीकों के परिणामस्वरूप बड़ी मात्रा में अपशिष्ट के साथ-साथ अन्य पर्यावरणीय समस्याएँ भी पैदा होती हैं। अतएव, सतत पोषणीय विकास भावी पीढ़ियों के लिए संसाधनों के संरक्षण का आह्वान करता है।

8. जनजातीय समन्वित विकास उपयोजना से गद्दी जनजाति को मिले तीन सामाजिक आर्थिक लाभ निम्नलिखित हैं-

- साक्षरता दर में तेजी से वृद्धि, लिंग अनुपात में सुधार और बाल-विवाह में कमी हुई है।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

- भरमौर क्षेत्र में दालों और अन्य नकदी फ़सलों की खेती में बढ़ोतरी हुई है।
- इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में पशुचारण के घटते महत्व को इस बात से आँका जा सकता है कि आज कुल पारिवारिक इकाइयों का दसवाँ भाग ही ऋतु प्रवास करता है।

9.

- भारत ने 1950 एवं 1960 के दशक में खाद्यान्नों की गंभीर कमी का अनुभव किया है। 1970 के दशक के बाद हरित क्रांति में सफलता मिलने पर खाद्यान्नों का आयात रोक दिया गया।
- खाद्यान्नों के आयात की जगह उर्वरकों एवं पेट्रोलियम ने ले ली। मशीन एवं उपस्कर, विशेष स्टील, खाद्य तेल तथा रसायन मुख्य रूप से आयात व्यापार की रचना करते हैं।

10. **प्रतिकर्ष कारक–** वे कारक, जो लोगों के उद्गम स्थान को कम आकर्षक बनाते हैं तथा लोग अपने उद्गम स्थान को छोड़कर अन्य प्रदेश में जाने के लिए मजबूर हो जाते हैं, प्रतिकर्ष कारक कहलाते हैं। प्रमुख प्रतिकर्ष कारक- बेरोजगारी, प्राकृतिक आपदा, महामारी, प्रतिकूल जलवायु, राजनीतिक उपद्रव, रहन-सहन की निम्न दशाएँ, सामाजिक– आर्थिक पिछड़ापन आदि।

11. **मध्यम मानव विकास वाले देशों की तीन चुनौतियाँ-**

- इस वर्ग के कुछ देश पूर्वकालीन उपनिवेश थे जबकि अन्य अनेक देशों का विकास 1990 ई. में तत्कालीन सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् हुआ है।
- इनमें से अधिकांश देशों में उच्चतर मानव विकास के स्कोर वाले देशों की तुलना में सामाजिक विविधता अधिक पाई जाती है।
- इस वर्ग के अनेक देशों ने अपने अभिनव इतिहास में राजनीतिक अस्थिरता और सामाजिक विद्रोह का सामना किया है।

12. **राइन नदी** जर्मनी और नीदरलैंड से होकर प्रवाहित होती है। यह नदी एक संपन्न कोयला क्षेत्र से होकर प्रवाहित होती है तथा संपूर्ण नदी बेसिन विनिर्माण क्षेत्र की दृष्टि से अत्यधिक संपन्न है। यह जलमार्ग स्विटजरलैंड, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम तथा नीदरलैंड के औद्योगिक क्षेत्रों को उत्तरी अटलांटिक समुद्री मार्ग से जोड़ता है। प्रतिवर्ष 20,000 से अधिक समुद्री जलयान तथा लगभग 2 लाख आंतरिक मालवाहक पोत वस्तुओं एवं सामग्रियों का आदान-प्रदान करते हैं।

13. 1948 में विश्व को उच्च सीमा शुल्क और विभिन्न प्रकार की अन्य बाधाओं से मुक्त कराने हेतु कुछ देशों के द्वारा 'जनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड एंड टैरिफ' (GATT) का गठन किया गया। जनवरी 1995 से (GATT) को **विश्व व्यापार संगठन** (WTO) में रूपांतरित कर दिया गया। विश्व व्यापार संगठन राष्ट्रों के मध्य वैश्विक नियमों का व्यवहार करता है तथा इसके सदस्य देशों के मध्य विवादों का निपटारा करता है।

14. **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार** विभिन्न राष्ट्रों के बीच राष्ट्रीय सीमाओं के आर-पार वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान को कहते हैं।
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को **दो प्रकारों** में वर्गीकृत किया जा सकता है:
(i) द्विपार्श्विक व्यापार: द्विपार्श्विक व्यापार दो देशों के द्वारा एक दूसरे के साथ किया जाता है।
(ii) बहु पार्श्विक व्यापार: बहु पार्श्विक व्यापार बहुत से व्यापारिक देशों के साथ किया जाता है।

15. **1991 की भारतीय जनगणना में नगरीय बस्ती** को इस प्रकार परिभाषित किया है। 'सभी स्थान जहाँ नगरपालिका, निगम, छावनी बोर्ड या अधिसूचित नगरीय क्षेत्र समिति हो एवं कम से कम 5000 व्यक्ति वहाँ निवास करते हों, 75 प्रतिशत पुरुष श्रमिक गैर कृषि कार्यों में संलग्न हों व जनसंख्या का घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो, ऐसे स्थान या क्षेत्र को नगरीय बस्ती कहेंगे।'

खण्ड- स

16. भारत एक उष्णकटिबंधीय देश है एवं सूती कपड़ा गर्म और आर्द्र जलवायु के लिए एक आरामदायक वस्त्र है। भारत में कपास का बड़ी मात्रा में उत्पादन होता था। देश में इस उद्योग के लिए आवश्यक कुशल श्रमिक प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे। भारत में इन्हीं कारणों से वस्त्र उद्योग का विकास हुआ परन्तु अंग्रेजों ने स्वदेशी सूती वस्त्र उद्योग के विकास को प्रोत्साहित नहीं किया। 1854 में, पहली आधुनिक सूती मिल की स्थापना मुंबई में की गई। इस शहर को सूती वस्त्र निर्माण केंद्र के रूप में कई लाभ प्राप्त थे। बाद में दो और मिलें (शाहपुर मिल और कैलिको मिल) अहमदाबाद में स्थापित की गईं। 1947 तक भारत में मिलों की संख्या 423 तक पहुँच गई।

17. **राष्ट्रीय जल मार्ग संख्या 1-**
इसका विस्तार इलाहाबाद से हल्दिया तक तथा लम्बाई 1,620 कि.मी. है। यह भारत के सर्वाधिक महत्वपूर्ण जलमार्गों में से एक है जो यंत्रीकृत नौकाओं द्वारा पटना तक साधारण नौकाओं द्वारा हरिद्वार तक नौकायन योग्य है। यह विकासात्मक उद्देश्यों के लिए तीन भागों में विभाजित है– (i) हल्दिया-फरक्का, (ii) फरक्का-पटना, (iii) पटना-इलाहाबाद।
राष्ट्रीय जल मार्ग संख्या 2–
इसका विस्तार सदिया से धुबरी तक तथा लम्बाई 891 कि.मी. है। ब्रह्मपुत्र नदी स्टीमर द्वारा डिब्रूगढ़ तक नौकायन योग्य है जिसका भारत व बांग्लादेश साझेदारी में प्रयोग करते हैं।
राष्ट्रीय जल मार्ग संख्या 3-
इसका विस्तार कोट्टापुरम से कोलम तक तथा लम्बाई 168 कि.मी. है। इसके अंतर्गत पश्चिमी तट नहर के साथ चंपाकारा तथा उद्योग मंडल नहरें आती हैं।

18. **चतुर्थ क्रियाकलाप**- ये क्रियाकलाप अनुसंधान और विकास पर केंद्रित होते हैं और विशिष्टीकृत ज्ञान प्रौद्योगिक कुशलता और प्रशासकीय सामर्थ्य से संबद्ध सेवाओं के उन्नत नमूने के रूप में देखे जाते हैं। चतुर्थ क्रियाकलापों में सूचना का संग्रहण, उत्पादन और प्रकीर्णन अथवा सूचना का उत्पादन आदि सम्मिलित होते हैं।
पंचम क्रियाकलाप- उच्चतम स्तर के निर्णय लेने तथा नीतियों का निर्माण करने वाले पंचम क्रियाकलापों को निभाते हैं। इनमें और ज्ञान आधारित उद्योगों, जो सामान्यतः चतुर्थ सेक्टर से जुड़ी होती हैं, में सूक्ष्म अंतर होता है। पंचम क्रियाकलाप वे सेवाएँ हैं जो नवीन एवं वर्तमान विचारों की रचना, उनके पुनर्गठन और व्याख्या; आँकड़ों की व्याख्या और प्रयोग तथा नई प्रौद्योगिकी के मूल्यांकन पर केंद्रित होती हैं।

खण्ड - द

19. भारत की दो प्रमुख दलहन फसलें:

चना-

- **महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ-** चना उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों की फ़सल है। यह मुख्यतः वर्षा आधारित फ़सल है जो देश के मध्य, पश्चिमी तथा उत्तर-पश्चिमी भागों में रबी की ऋतु में बोई जाती है। इस फ़सल को सफलतापूर्वक उगाने के लिए वर्षा की केवल एक या दो हल्की बौछारों या एक या दो बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। हरियाणा, पंजाब तथा उत्तरी राजस्थान में हरित क्रांति की शुरुआत से चने के फ़सल क्षेत्रों में कमी आई है तथा इसके स्थान पर गेहूँ की फ़सल बोई जाती है। इसकी उत्पादकता कम है तथा सिंचित क्षेत्रों में भी इसकी उत्पादकता में एक वर्ष से दूसरे वर्ष के बीच उतार-चढ़ाव पाया जाता है।
- **प्रमुख उत्पादन क्षेत्र-** देश के कुल बोये क्षेत्र के केवल 2.8 प्रतिशत भाग पर ही चने की खेती की जाती है। इस फ़सल के प्रमुख उत्पादक राज्य मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना तथा राजस्थान है।

अरहर-

- **महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ-** यह देश की दूसरी प्रमुख दाल फ़सल है। इसे लाल चना तथा पिजन पी. के नाम से भी जाना जाता है। यह देश के मध्य तथा दक्षिणी राज्यों के शुष्क भागों में वर्षा-आधारित परिस्थितियों तथा सीमांत भू-क्षेत्रों पर बोई जाती है।
- **प्रमुख उत्पादन क्षेत्र-** भारत के कुल बोए गए क्षेत्र के लगभग 2 प्रतिशत भाग पर इसकी खेती की जाती है। देश के अरहर के कुल उत्पादन का लगभग एक तिहाई भाग अकेले महाराष्ट्र से आता है। अन्य प्रमुख उत्पादक राज्य उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात तथा मध्य प्रदेश हैं। इस फ़सल की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता कम तथा अनियमित है।

अथवा

कृषि उत्पादन में वृद्धि तथा प्रौद्योगिकी का विकास

- **उत्पादन तथा पैदावार में प्रभावशाली वृद्धि-** बहुत-सी फ़सलों जैसे- चावल तथा गेहूँ के उत्पादन तथा पैदावार में प्रभावशाली वृद्धि हुई है। अन्य फ़सलों मुख्यतः गन्ना, तिलहन तथा कपास के उत्पादन में प्रशंसनीय वृद्धि हुई है।
- **सिंचाई का प्रसार-** सिंचाई के प्रसार ने देश में कृषि उत्पादन बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी जैसे बीजों की उत्तम किस्में, रासायनिक खादों, कीटनाशकों तथा मशीनरी के प्रयोग के लिए आधार प्रदान किया है।
- **आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी-** देश के विभिन्न क्षेत्रों में आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी का प्रसार तीव्रता से हुआ है। पिछले 40 वर्षों में रासायनिक उर्वरकों की खपत में भी 15 गुना वृद्धि हुई है। उत्तम बीज के किस्मों में कीट प्रतिरोधकता कम है, अत: देश में 1960 के दशक से कीटनाशकों की खपत में भी महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

भारतीय कृषि से जुड़ी दो समस्याएँ निम्नलिखित हैं-

(i) वित्तीय संसाधनों की बाध्यताएँ तथा ऋणग्रस्तता- आधुनिक कृषि में लागत बहुत आती है। सीमांत और छोटे किसानों की कृषि बचत बहुत कम या न के बराबर है। अत: वे सघन संसाधन दृष्टिकोण से की जाने वाली कृषि में निवेश करने में असमर्थ हैं। इन समस्याओं से उबरने के लिए, बहुत से किसान विविध संस्थाओं तथा महाजनों से ऋण लेते हैं। कृषि से कम होती आय तथा फ़सलों के खराब होने से वे कर्ज़ के जाल में फँसते जा रहे हैं।

(ii) कृषि योग्य भूमि का निम्नीकरण- भूमि संसाधनों का निम्नीकरण सिंचाई और कृषि विकास की दोषपूर्ण नीतियों से उत्पन्न हुई समस्याओं में से एक गंभीर समस्या है। यह गंभीर समस्या इसलिए है क्योंकि इससे मृदा उर्वरता क्षीण हो सकती है। यह समस्या विशेषकर सिंचित क्षेत्रों में भयावह है। कृषि भूमि का एक बड़ा भाग जलाक्रांतता, लवणता तथा मृदा क्षारता के कारण बंजर हो चुका है। कीटनाशक रसायनों के अत्यधिक प्रयोग से मृदा परिच्छेदिका में ज़हरीले तत्वों का सांद्रण हो गया है।

20. उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग की संकल्पना- निर्माण क्रियाओं में उच्च प्रौद्योगिकी नवीनतम पीढ़ी है। इसमें उन्नत वैज्ञानिक एवं इंजीनियरिंग उत्पादों का निर्माण गहन शोध एवं विकास के प्रयोग द्वारा किया जाता है। संपूर्ण श्रमिक शक्ति का अधिकतर भाग व्यावसायिक (सफ़ेद कॉलर) श्रमिकों का होता है। ये उच्च, दक्ष एवं विशिष्ट व्यावसायिक श्रमिक वास्तविक उत्पादन (नीला कॉलर) श्रमिकों से संख्या में अधिक होते हैं। उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग में यंत्रमानव, कंप्यूटर आधारित डिज़ाइन (कैड) तथा निर्माण, धातु पिघलाने एवं शोधन के इलेक्ट्रोनिक नियंत्रण एवं नए रासायनिक व औषधीय उत्पाद प्रमुख स्थान रखते हैं।

इस भूदृश्य में विशाल भवनों, कारखानों एवं भंडार क्षेत्रों के स्थान पर आधुनिक, नीचे साफ़-सुथरे, बिखरे कार्यालय एवं प्रयोगशालाएँ देखने को मिलती हैं। इस समय जो भी प्रादेशिक व स्थानीय विकास की योजनाएँ बन रही हैं उनमें नियोजित व्यवसाय पार्क का निर्माण किया जा रहा है। वे उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग जो प्रादेशिक संकेंद्रित हैं, आत्मनिर्भर एवं उच्च विशिष्टता लिए होते हैं, उन्हें प्रौद्योगिक ध्रुव कहा जाता है। सैन फ्रांसिस्को के समीप सिलीकन घाटी एवं सियटल के समीप सिलीकन वन प्रौद्योगिक ध्रुव के अच्छे उदाहरण हैं। भारत में बेंगलुरु, हैदराबाद, गुरुग्राम, नोएडा आदि प्रौद्योगिकी ध्रुव के उदाहरण हैं।

उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग अधिकांशत: महानगरीय परिधि क्षेत्रों में ही विकसित होते हैं। इन उद्योगों का कच्चा माल बौद्धिक सम्पदा अथवा ज्ञान होता है। ये उद्योग कुशल ज्ञान कर्मियों द्वारा संचालित होता है। अत: जहाँ विज्ञान और प्रौद्योगिकीय इनक्यूबेटर पार्क, विश्वविद्यालय, इंजीनियरिंग व तकनीकी संस्थान एवं अनुसंधान केन्द्र उपलब्ध होतें हैं, ये उद्योग वहीं केन्द्रित होते हैं।

अथवा

उद्योगों को प्रभावित करने कोई चार कारक-

(i) श्रम आपूर्ति तक अभिगम्यता- उद्योगों की अवस्थिति में श्रम एक प्रमुख कारक है। बढ़ते हुए यंत्रीकरण, स्वचलन एवं औद्योगिक प्रक्रिया के लचीलेपन ने उद्योगों में श्रमिकों पर निर्भरता को कम किया है। स्वचालित (निर्माण प्रक्रिया के दौरान मानव की सोच को सम्मिलित किए बिना कार्य) यंत्रीकरण की

विकसित अवस्था के कारण कुछ प्रकार के उद्योगों में अब भी कुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है।

(ii) शक्ति के साधनों तक अभिगम्यता- वे उद्योग जिनमें अधिक शक्ति की आवश्कता होती है वे ऊर्जा के स्रोतों के समीप लगाए जाते हैं। उदाहरण- एल्युमिनियम उद्योग। प्राचीन समय में कोयला प्रमुख शक्ति का साधन था, पर आजकल जल विद्युत एवं खनिज तेल भी कई उद्योगों के लिए शक्ति का महत्त्वपूर्ण साधन है।

(iii) बाजार तक पहुँच- उद्योगों की स्थापना में सबसे प्रमुख कारक उसके द्वारा उत्पादित माल के लिए उपलब्ध बाज़ार का होना है। बाज़ार से तात्पर्य उस क्षेत्र में तैयार वस्तुओं की माँग एवं वहाँ के निवासियों में खरीदने की क्षमता (क्रय शक्ति) है। दूरस्थ क्षेत्र जहाँ कम जनसंख्या निवास करती है छोटे बाज़ारों से युक्त होते हैं। उदाहरण- यूरोप, उत्तरी अमेरिका, जापान एवं आस्ट्रेलिया के क्षेत्र वृहद् वैश्विक बाज़ार हैं, क्योंकि इन प्रदेशों के लोगों की क्रय क्षमता अधिक है।

(iv) समूहन अर्थव्यवस्था तक अभिगम्यता/उद्योगों के मध्य संबंध- प्रधान उद्योग की समीपता से अन्य अनेक उद्योग लाभान्वित होते हैं। ये लाभ समूहन अर्थव्यवस्था के रूप में परिणत हो जाते हैं। विभिन्न उद्योगों के मध्य पाई जाने वाली श्रृंखला से बचत की प्राप्ति होती है।

खण्ड - य

21.

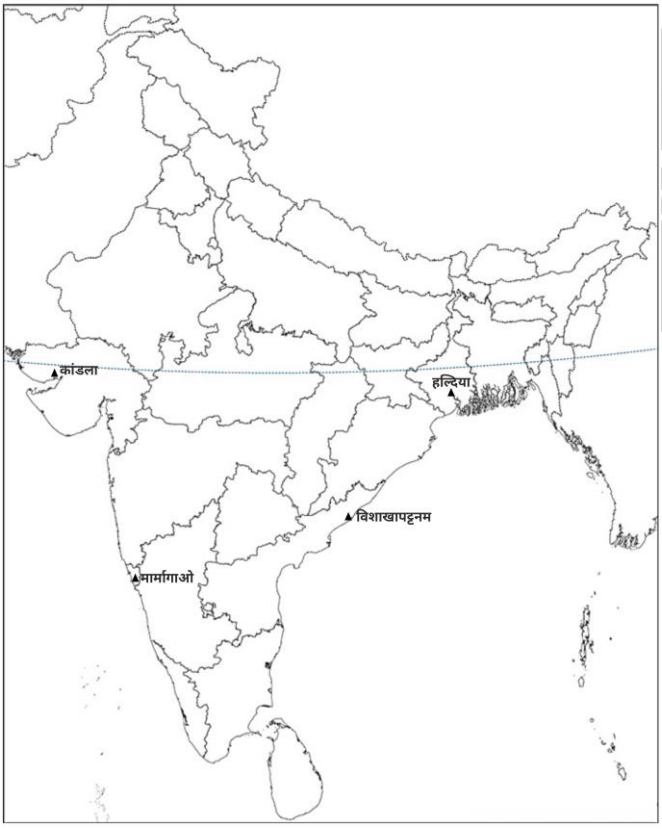

22.

#अब कामयाबी पर होगा सबका हक़

UTKARSH CLASSES | CLASS 6-12

Smart e-Learning Programme

उत्कर्ष एप से घर बैठे कीजिए ऑनलाइन ट्यूशन और बनिए क्लास में टॉपर

उत्कर्ष एप में गुणवत्तामूलक स्कूली शिक्षा के ऑनलाइन कोर्सेस नाममात्र के शुल्क में उपलब्ध

QR Code Scan
कर आज ही
'उत्कर्ष एप'
डाउनलोड करें

Academic Session 2022-23

Class VI-VIII	~~₹10,000~~	₹1999	CBSE | RBSE & Other 7 State Boards
Class IX-X	~~₹15,000~~	₹2999	
Class XI-XII	~~₹18,000~~	₹3499	

₹1200/- per subject Live	₹600/- per subject Recorded

Class XI-XII
(Science, Commerce & Arts)

• **LIVE & Recorded Classes** • **English & Hindi Medium**

आज से ही बनाएँ अपनी पढ़ाई को और बेहतर
Utkarsh Online Tuition के साथ

उत्कर्ष एप ही क्यों ?

- विख्यात व अनुभवी विषय-विशेषज्ञों की टीम
- फैकल्टी द्वारा हस्तलिखित पैनल PDF & e-Notes
- नियमित टेस्ट द्वारा मूल्यांकन (MCQs & Self Assessment)
- टॉपिकवाइज़ क्विज़ एवं उनका वीडियो व्याख्यान
- Live Poll during interactive classes.
- 4K डिजिटल पैनल पर इंटरैक्टिव कक्षाएँ
- 360° Rapid Revision.

15 M+ SUBSCRIBERS
2 M+ SUBSCRIBERS
10 M+ DOWNLOADS
1 M+ FOLLOWERS

UTKARSH CLASSES

www.utkarsh.com support@utkarsh.com